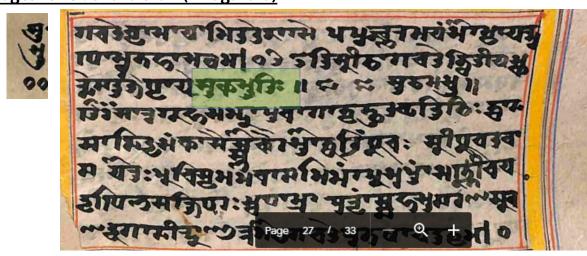
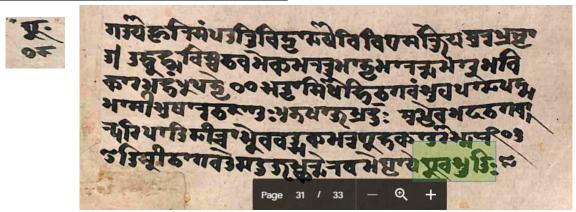
Pages 1-23: Prahlada Stuti (Bhagavata)



Pages 23-27 : Shuka Stuti (Bhagavata)



Pages 27-33: Dhruva Stuti (Bhagavata)







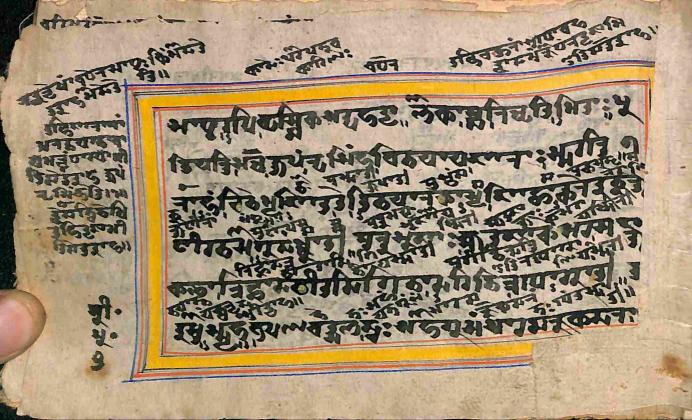


विभू विद्वाराष्ट्राम्य अस्ति अ नपरिशिधा भापासुधमंत्रिक्षभ अहत्रकार्यक्रमंत्रान धन्त्राख्य । भूगहारी इहिकिएन हुए त्रयालाभनपाउभन्तान्त्रकात्रभनः अ नेत्रपुनः ल्लन्भग्रान्थात् नविशेषकार्नेस्य भू दुर्श्यानिकाला के भू के माने माना मानियुधः कर् यञ्चल्याच्याच्यान्यस् मी. भाषश्यवाभाषात्री : "र उभामक्रिया?

विक्तवं स्वास्त्राच पुनः शिहार क्ष्याम् अन मी,नीमद्रण्याम् अविभन्भन्य प्रिका अया सन गानिए ति ? दियुगन्त्रवालान स अव्दूर्भाव ELECTRICE STORY Paralle Manignation उना वामक ग्रह्मा महाने मा वामनी MAN SHOULD REPUBLICATION

भ्रेयोगी ए नर्भेग्यामक क्षा करण न्द्रक्ष्याम्य

UII



कुंभनी अम्भाउरम् श्रुयणमा १० भारत्रापश

विकः शर्मेन उपा स्त्रित कमा अन्देशिक विक्री

विकारिन्यपान न्छ्यु अभारत्य िमार्थिया य ननस्थितनभूका विभवेशनान्तः पाः गयानानाः पति 239111311

गुर्भाष्यभूकाः

स्थ्रिकाथुकावस्त्रप्रिणभाक्षः ग्रेवी वसरावयाञ्चा शाहर इसकः।यनिक्र विश्वास्थानिक विश्वास

ल विस्पृत्यम् - देश्मः अन

अधकः किश्रातिक ने लेक म् विकृति उग्भेनग अधिकारी हो का विश्व सक् श्राह्मा नारा थे -बाउद्गा क्यक्रभवान्त्रयथं क्तिगीडः अक्षिप्रधानग्राम् नामिन्द्रिक्षानिक्ष क्या न गान्यदभाः क्रानिन है: भारत समम्बद्धाः पम्पाालयहंभभरः ०० चल्लाभूनक्मरेलेथिउ र विभिन्न । विभिन्न गाउनित प्रकाश वड्डिंग्रस्मिन हा। होगदि सन्तरंश्यम 35000 रेकिश्वाक्षण मान्यावरेशावरेशा

भट्टाविभागातिः, मन् विभाविभाष्ट्राच्यान्यम्

पंतरश्राक्षास्य व प्रथार्भा भागाः क्षेत्रभागाः भागाः भा

न्यान्य क्षत्रीतिक्ष्याः न्यान्यक्षयाः स्वत्र क्षत्र क्षत्र क्षत्र स्वत्र क्षत्र क्षत्र क्षत्र स्वत्र क्षत्र न्तिकभान्त्रवं कार्युक्षित्रम् मान्द्रक्षित्रम् काभिविभभाग मुक्तिम्भागम् निधीर्द्धभानभूथकर्ध्व वर्गान्त्र मेव यान सर्धं में भारत गर्दे म

उत्ति कं निविद्धः भिष्नदेशिभगिभका उपादस्य येग्रेड्या यमण्डा भगम्परम्बन्धमान्यद्वाःकाः क्षेत्रः विद्यात्रिहेत्य

उदिभग्न३भग्नः सम्बद्धभन्नः शुद्धान्द्रभः ॥ सम्बद्धस्य प्रमानः भग्नम् भाग्नः भन्तम् प्रमानः भन्तम् प्रमानः

वक्डमार

मुल्लक्ष्या कि वर

मिरियम्बर स्थानिया ग्रह् विक्रवेनन्थ्राप्तान्द्रपानुभक्त उउदिस् उभाग क्ति। थि। अंभवण भूतरगीत्व स्थान क्रियार्थः यहात्र पानकार्याभी माज्यम्: वार्कारकार्यक्षाक्षाक्षा नप्रभाननः रमान्यार कारान्य कारान्य कारान्य

महत्त्रारक्षण्डार्कण्डार्था वर्षाम्यार्थित वर्षाम्यार्थित वर्षा

न्यां के सवाद्य के द्वार के विश्वास्त्र के स्वार के स्वर के स्वार के स्वार के स्वार के स्वार के स्वार के स्वार के स्वार

विश्वराज्यकुड्रभकाथ १० भगुलाव उत्तपसुभद्धिकुरपिया स्पृतिकृतिका गार् वामाण्या गाम्या कार्या एउड ,अर्ड, युक्त हो के रिक्ताभाग र अमुग्र समा कार्डिक मार्ग बेर्क्न नेत्र उत्स्थित भुक्ति भूति भूत ३३ इत्र इत

नेक्तंड्य भम्नय द्वार्गिक्र्या भवेर दशक्ति भिगः

उक्स्मीनिस्र क

ननयकु उद्गानक भवऽद्गिल्लान्य १ लभ्भाषिक पश्चे किन्भुणस्य अनुका

अवाक्षरक

करकार महत्त्वपुष प्रकृतिः एएगावसुन्तर्भे अर्थे करकाराम् का अवशिक्ष व:॥॥

मेर्ड नः विद्यम्ब परभूथानभ

मुक्तिकार्याः अक इत्वीतार्याः अव इस्ट्रेड्डिश्चार्याः इस्ट्रेडिश्चार्याः मुकुन्कालाः अभिनीरिक

न्या क्रिया क्रिया विश्व क्रिया क्रिय क्रिय क्रिय क्रिया क्रिय क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्

がある

याचित्रंकमञ्जू

कार्छ , कस्तुरास्त्री गर्भे सुराम्भू भर्दे उर्ग् यउभाउनभूष्यनित्र १ । इत्रिक्षिकेश्य वर्ग्ने क्रिक्ति विषय भिरंभिर्त्ता स्त्रीयन प्रमुक्ष्यक्ष्णिया गानुरा देश्वीतं क्लिप्राम् क्वियिग्रीषभ्द्रभा १०नाग्नभुवक्षाभ्वना क्ष्यायम्भभीयाक्तिम्भभूभणुगात्भाक्षाः

क्नाइश्वाद्यक कराजकारि अरिविक्या भार वक्ता अविवाग न विश्वास्त्र ।।।

क्रिन्छभुद्रभक्तमवाग्वकांक्रमण्यक् क्रिन् भद्गर्भे क्षेत्रभव। हिएए पुरः भवस्य प्रान्थिक मध्यारिहारी है। विमानगाने भारत । ज्या ग्रुसम्बर्धियण्यः अभिन्नुषं उत्राहिति भिक्रीनः ३९ । के करिया विक शिभावित मंबेराभूग्रेकाम्बल्जाम्बर क्रमहर्गाभ

अन्ति । अधिक विभिन्न । अधिक विभिन्न

उिमानिकार ५ ५ किशिता भेरतिया अपराध राजम्या अपराध वित्यक्षण्या वित्य भीराष्ट्र क्षिम्बरीय स्टास्ट क्षम्बरीय इंडरव्युतिग्वद्धाः भग्राक्तुभनयग्रथ देशुनिद्रविसद्गाः भग्राक्तुभनयग्रथ

उद्गातेकश्री अंग

इतिकः प्रमुख्याः इतिक्तिक्ष्यम्योः इतिक्ष्यम्योः

थु.

भन्भविष् भितिन्त्र भागित्र हे इन्द्रा न्यरक्तिमः नृत्विद्धर्यं प्रथम् कत्त्र्रह्मरल्ड्मान्य ३०, यन्युनः कार्यः भट्टेर्या नन भूकेशनकार्त में भूकेशिनिम्हीं।भी क्षांचा रहित्र कृष्ण नक्ष रक्षका करिक्कीः न इसस

विश्व स्थानित किशियान: के श्रेण हैं, के युर्धिर निवियह भग्रः भ

कुः स्पेर्विभू याउनी द्वार्थिक स्पान राज्या स्पानिक राज्या

भेगुउण्यन

がない

मुख्या है स्वाहर स्वाहर से स्व किन्सिन हरायान्यान अवस्ति। प्रयानभाष्ट्री

मानमरुतिः भी रागः स्वाः भूगार्गाम् सुनित्ते भूगार्गाम् सुनित्ते

मभभूनयः विलभ्युभुयः संभ नः भगभद्रभुमुम्बर्भित्रनः अनुभव्यक्ष्य भित्रभ्युष्ठियभेषु उप्रमुख्य स्ट क्ष्य स्ट क्य क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्य क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्य क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्य क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्य क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्य क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्य क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्य क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्य क्ष्य स्ट क्य क्ष्य स्ट क्य क्ष्य स्ट क्ष क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य स्ट क्ष्य भी निरमुभाश्यानिमयनगणभाश्रणमनिक्कालिश्रेश उत्ताः अयुर्वित्त्यः लेगानी कार्यकत्त भगरहता अ किसार गन्भेनभः ह विमेन्ना क्या हार लेग्स्य करा कर है लेल्याना विकास

अ भववित

00

भा अबकु युव मन्धिन भः । उथिति मन्य प्राथमिन निश्चिम् विकः अभक्षालः वार्यन्विकितिकिति र्गांडक्रमुंडक्- २ किरण्डान्त्र्यक्रियम्बर्गमुठा रक्ष्युवन्यवन्यः यह्मभाषायुवानुस्य ग्रानिक में भूकिविश्वत्मः त भाषा मुद्दात्व भूषो याभ्याभियाव मान्यभूष्मेयः गाउद्ये क्रांग्यम्भूम हिलिया किरिया मुख्या भी प्राप्ता मियाः भाउत्थ क्षयित्र वर्षाङ्गिया विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिय विक्रि

धन्तकः

धम्मत्वकाष्ट्रभाउरं भग्नेतरं भक्तावाद्यारं गाति : ७ गमञ्ज्ञायुन्भभाषिणेत्रयाचियान्यस्त्रितिहानुभा ः विद्वानिसे उनुवर्गे यथा सम्भाभा निक्वा वर्षे मीरु३० भूमीरेनुग्यनभू गुरुशास्त्र वा नुगण्य भरीभागिकि अलगाणभूराकु दिल्भुतः भरेष थीलाभाषा १० क्राप्त किंद्र भारती विक्रित्रायमेउयाम्भ्रथ्रथ्रथः कृत्रित्राणंचिक्रमंधे रुगुद्धका भेला हुथी शुरुगत व गोर्थिंभे ०९ न असु से व

3

99

गर्वे ग्रुप्त या भिरंदे राग्से थ भुज्ञत्त भ्यं भे ग्रुप्त ापायुनक्ष्मचभा ०३ इतिमीक्रमच ते क्रितीय श रमाजिए से मिल्या कि से मिल्या विश्वान्त्र के मान्य के निया क माग्डिभंक में ब्रेके भेग्व विष्यः मीप्रवाव म या अवश्यित्य भिर्मा भिर्मा अभिने भारतिय हािपन्त्रमित्राः भण्या महामुक्सालम् लक्षान्तीकुल्अविकाराउभुक्षायाउद्देशी ०

मक्श्रेभवस्मावविकसम्बन्धाः यास्यिकप्रभाव भद्रभाष्ट्रस्थमा अध्यात्रं विद्युप्रवस्थान्य अने नेवम्प्रविक्वभविक्वभित्र प्रशास्त्र प्रशास्त्र वर्षन्य म्भमध्वित्रं भुभूभृष्ठमु इतन्यकवर्ययः उद्यापन त्रमान्यपण्यस्तिकार्देव अधिक क्षभाव वर् उनविभूभगउपभुवभाषयागे वेद्वां कवाध्यविभक्त "भर्डेडे: यज्ञीकल्कानंज्ञांचेर्येवेद्यभिश्चित्र यर् ब्रह्मंचरके विद्यालमा म यानिस्त्रितेन

2:

ख्यात्रयम् एनामुबद्धानकषाम् बल्नान्यानु भगरकाश्वाद्यान्यभग्नित्रक्राम्य लिउ पाउउ विभानाय । हिंगियकः भूक इस्पि भेश्रभीत्रङ्गकनन् भारतं त्युरुष्मापनाभी सन्ता। भेद्युण्भत्रस्भनं कवित्रे से तुर्दे एक स्थापनाभी उ: च रेन प्रान्धितं प्रियमी समृद्धाः भारत् थल्क्द्रिविष्ठम्यः यड्यून्एठवमीययम्यनि इसेना हुन्छ छ के यभूत अभूसङ्गः न विद्युगिष्ठि।

स्त्यानिस्योक्त वभाडेक्ट्रकिहिःयगिनियंभक्ति गयभा मृथ्यावपूभा भन्न हुन्कन गः याभवित्र नयावाकः । कन्य नामाक्षायलंग्नानाम् वि रेपमानुम्हाननुभाषभुकक्क यत्रपिक्षित्रक्ष क्रुन्नियम्गर्ड्भान्द्वान्डभान्द्वाभाग्ये १ रान्ड्थज्यिम्बर्गवेषक्ष्याः क्रिक्षि हमवंभूचीमः यद्वहुविभाउभायद्वित्र अध्यक्षित्र विभावत्र विभावतः विभावत्र विभावत्य विभावत्र विभावत्य विभावत्य विभावत्य विभावत्य विभावत्य विभावत्य विभावत्य विभा

T.

गांगेक्षित्रं भेगांगितिक प्रतिविश्व मित्र मित्र

